कृपया इसे रविवार 1 मार्च से पहले ना छापे।

# बी–स्कूल वालों के लिए सुनहरा मौका

**विनीत नारायण**

इस साल देश के प्रतिष्ठित प्रबन्धकीय संस्थानों में नौकरी का बाजार बहुत ठंडा रहा। जहां पिछले वर्ष युवा ग्रेजुएट्स को 18 लाख रुपए महीनें के वेतन पैकेजों की तमाम पेशकशें मिली थी और औसतन हर ग्रेजुएट को 2 से 3 आकर्षक नौकरियों की पेशकशें मिली थी वहीं इस बार हालात बहुत बुरी रही। इससे देश के सभी प्रतिष्ठित प्रबन्धकीय संस्थानों में भारी हताशा है। इनमें आईआईएम अहमदाबाद जैसे संस्थान शामिल हैं। पर अगर गहराई से देखा जाए तो यह सुनहरा मौका है इन नौजवानों के लिए अपनी जिन्दगी की हकीकत समझने का। पिछले 10 वर्षों में उदारीकरण के काम बैंकिग क्षेत्र व अन्य क्षेत्रों में नौकरी के बाजार में जिस तरह का उछाल आया वह वास्तविक नहीं था। एक 20 साल के नौजवान को अगर जिन्दगी की शुरूआत में 10–12 लाख रुपया महीना मिलेगा तो वह जिन्दगी की हकीकत कभी नहीं जान पाएगा। वह समाज से कट जाएगा। देश का उसके लिए कोई मायना नहीं रहेगा। पैसे की हवस इतना बढ़ेगी कि वो कभी चैन से बैठ नहीं पाएगा। यही हो रहा था। आईआईटी दिल्ली और आईआईएम अहमदाबाद से पढ़ा मेरा एक अनुज समान मित्र 26 लाख रुपया महीना पाकर भी अवसाद में डूबा रहता था। उसे यह जानकर दुख होता था कि बैंकिग सेक्टर में उसके साथी उससे कई गुणा ज्यादा कमा रहे हैं। इन लोगों के माया जगत में जब कभी मुझे बात करने का अवसर मिलता तो मुझे यह देखकर बहुत तकलीफ होती की देश के गम्भीर मुद्दों से इन्हें कोई सारोकार नहीं है।

सत्यम जैसे घोटाले तो अब सामने आए है पर पिछले वर्षों में मैं कई बार इन लोगों से पूछता था कि ये मल्टीनेशनल तुम मुट्ठीभर नौजवानों को इतनी मोटी रकम आखिर क्यों देते हैं? जाहिर है कि वे तुम्हे इस्तेमाल कर इस देश से सैंकड़ों गुणा मुनाफा कमा रहे हैं। यह बात वे गलत नहीं समझते थे। पर आर्थिक मंदी ने सबको झकझोर कर रख दिया। जब अमरीका के सीईओ ही अपने वेतन और सुख सुविधाएं घटाने पर मजबूर किए जा रहे हैं तो भारत के इन नौजवानों की क्या बिसात? हर रोज बिना नोटिस के अनेक उच्च पदस्थ नौजवानों को बर्खास्त किया जा रहा है। माया जाल टूट रहा है। टूटना ही था क्योंकि इसके पैर जमीन पर नहीं थे। पर आकर्षण इतना था कि हर नौजवान इस दौड़ में शामिल था।

पहले कालेजों में एनसीसी, एनएसएस जैसी स्वयं सेवी इकाईयां स्थापित कर नौजवानों को देश की हकीकत से रुबरु किया जाता था। अब ये सब फैशनबल नहीं रहा। आईएएस और टाटा एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में आज भी नए भर्ती अवसरों को कम से कम दो महीनें गांव में रहना होता है। माओ ने चीनी क्रान्ति के बाद हर युवा को गांव में सेवा करना अनिवार्य कर दिया था। स्वीटजरलैण्ड में हर नागरिक 6 महीने सेना में अवश्य रहना होता है। जिससे वे चुस्त-दुरुस्त रहे और देश की सीमाओं की रक्षा के लिए तत्पर भी। उदारीकरण के दौर में देशों की आर्थिक सीमाएं ही नहीं टूटी बल्कि राजनैतिक सीमाओं की सार्थकता भी खत्म हो गई। भारत के इन प्रतिष्ठित संस्थानों से पढ़े ज्यादातर नौजवानों के लिए देश प्रेम के कोई मायने नहीं थे। अब झटका लगा है। यह समझ आ रहा है कि आर्थिक गुब्बारे के साथ बहुत ऊंचा नहीं उड़ा जा सकता। इस मौके का फायदा उठाना चाहिए। अमरीका की हालत सुधरे न सुधरे भारत की आर्थिक मंदी साल भर से ज्यादा चलने वाली नहीं है। ऐसे में इस मौके पर अवसाद में डूबने के बजाए इन नौजवानों को देश की हकीकत समझने की कोशिश करनी चाहिए। देश में सैकड़ों ऐसे स्वयंसेवी संगठन काम कर रहे हैं जहां इन्हीं संस्थानों के पढ़े नौजवान अपनी जवानी होम कर समाज के काम में जुटे हैं और संतुष्ट है। इन नौजवानों ने जब माया की चकाचौंध को ठुकराया था तब इनका मजाक उड़ा था। पर आज यही नौजवान इस पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं। पैसा ही जीवन में सबकुछ नहीं होता। कुछ अनूठा कर गुजरना एक ऐसा अनुभव है जो बड़ी से बड़ी भौतिक उपलब्धि को बौना बना देता है। इसलिए इस संकट को स्वर्णिम अवसर समझकर चुनौतियों से जूझना चाहिए। फिर जो समझ विकसित होगी वो चाहे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम किया जाए या भारत के स्तर पर, हमेशा जीवन में काम आएगी।

बीस साल पहले मार्केटिंग में एक चुनौति आई कि भारत के ग्रामीण बाजार को कैसे पकड़ा जाए। शहर संतुष्टि के स्तर पर पहुंच चुके थे। साबुन-तेल-शैम्पू जैसे उत्पादक अपना बाजार बढ़ा नहीं पा रहे थे। ऐसे लोगों की ढूंढ मची जो गांव की मानसिकता समझते हैं। एक मार्केटिंग विशेषज्ञ उस वक्त उभर कर आया। जो आईआईएम से पढ़कर भी अपने गांव से जुड़ा था। उसने यह चुनौति स्वीकारी और देहातों की चारपाईयों पर बैठकर मार्केटिंग सर्वेक्षण किए। ग्रामीण बाजार को समझा और देखते ही देखते एक साम्राज्य खड़ा कर दिया। आईआईएम या आईआईटी जैसे प्रतिष्ठानों के ग्रेजुएट अगर एक दो वर्ष स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ लगकर देश के गांव और कस्बों को समझ लेते हैं तो उनकी डिग्री में चार चांद लग जाएंगे। ये मंदी न होती तो ये मौका भी नहीं मिलता। इसलिए चुनौती को अवसर में बदलने का जज्बा होना चाहिए। फिर कोई चुनौती चुनौती नहीं रहती।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं देखें – www.vineetnarain.net